Government Degree College, Bagaha, West Champaran

Subject- Political Science

T. D. C Part I

Paper I Notes

Important questions

Head of Department

Assistant Professor

AJAY KUMAR

प्रश्न 1: आधुनिक राजनीतिक विज्ञान से आप क्या समझते हैं? इसके क्षेत्र की विवेचना करें।

उत्तर— बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक राजनीति विज्ञान का अध्ययन परंपरागत रूप में किया जाता था। इसका अध्ययन मूलतः राज्य और सरकार तक सीमित था। इसका अध्ययन मूलतः संस्थागत रूप में होता था। इस रूप में यह सिर्फ वर्णनात्मक था। इसे वैज्ञानिक आधार प्रदान करने का प्रयास नहीं किया गया था। इसके परिणामस्वरूप इसके आधार पर निश्चित भविष्यवाणी संभव नही हो पा रहा था। अतः राजनीति को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने का प्रयास बीसवीं शताब्दी में प्रारंभ किया गया। विशेषकर युद्धोत्तर काल में व्यवहारवादी विचारकों ने इस ~~दिशा~~ दिशा में प्रयास प्रारंभ किया।

राजनीति विज्ञान के संस्थागत स्वरूप के प्रति व्यवहारवादी विचारकों में काफी निराशा उत्पन्न हुयी। वे राजनीति को पूर्णतः वैज्ञानिक आधार पर आधारित करने की दिशा में अग्रसर हुए। वे राजनीति को कल्पनात्मक दृष्टि से नहीं बल्कि वे राजनीति को व्यवहार एवं क्रिया के रूप में देखने की ओर अग्रसर हुए। उन्होंने राजनीति विज्ञान को सच्चे अर्थों में वैज्ञानिक आधार प्रदान करने के लिए नवीन ~~~~ पद्धतियों को अपनाना प्रारंभ किया। ताकि वैज्ञानिक अध्ययन संभव हो सके।

और उसके आधार पर निश्चित निश्चित भविष्यवाणी संभव हो सके। इस प्रकार राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में एक नवीन आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ जिसे व्यवहारवादी आन्दोलन कहते हैं। इसे ही वर्तमान समय में आधुनिक राजनीति विज्ञान कहते हैं।

राजनीति विज्ञान की परंपरागत मान्यता के विरुद्ध असंतोष 1860 वाली दशक के उत्तरार्द्ध में ही प्रारंभ हो चुका था। इस क्रम में सर्वप्रथम वालटर बेजहॉट का नाम लिया जा सकता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि संविधान और राजनीति के कार्य करने के क्रम में बहुत सारी अदृश्य राजनीतिक प्रक्रियाऐं कार्यरत होती हैं जो सामाजिक और राजनीतिक स्थायित्व के निर्वाह में महत्वपूर्ण योगदान करती हैं। लेकिन, राजनीतिक सिद्धान्त के अंतर्गत इनपर ध्यान नही दिया जाता है। यह परंपरागत राजनीति विज्ञान का एक प्रमुख दोष है। अतः इस दोष को दूर किया जाना चाहिए।

1908 ई० में ग्राहम वालास ने ~~मनोवैज्ञानिक~~ मनोवैज्ञानिक आधार पर राजनीति विज्ञान का अध्ययन अपनी प्रसिद्ध रचना Human Nature in Politics में किया। उसने यह स्पष्ट किया कि मानव के राजनीतिक व्यवहार का निर्धारक कुछ अविवेकी तत्व होता है। इनपर ध्यान दिए बिना राजनीतिक सत्य तक नही पहुँचा जा सकता। लेकिन, परंपरागत राजनीति विज्ञान में इन तत्वों पर ध्यान नही दिया जाता है।

इसी प्रकार ऑर्थर बेंटली ने समुदाय के अध्ययन पर बल दिया तो डी० बी० ट्रूमैन ने राजनीति विज्ञान के मापन और प्रमाणीकरण किए जाने पर बल दिया। लेकिन इन सबों से अधिक गहरा प्रभाव व्यवहारवादी आन्दोलन पर चार्ल्स मेरियम का पड़ा जिन्होंने राजनीति विज्ञान में राजनीतिक व्यवहार के अध्ययन पर विशेष बल दिया।

आधुनिक राजनीतिक विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र निम्न हैं।

राजनीति विज्ञान में नए उपागमों की नई प्रवृत्तियों के कारण इसके अध्ययन क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं—

1. <u>शक्ति का अध्ययन</u> – यह आधुनिक राजनीतिक विज्ञान का केन्द्रीय विषय हो गया है। प्राचीन राजनीतिक दार्शनिक एवं विद्वानों ने भी शक्ति अवधारणा का अध्ययन किया है। कैटलिन ने राजनीतिक विज्ञान को 'शक्ति का विज्ञान' कहा है। हैरोल्ड लॉसवेल ने भी कहा है कि राजनीतिक विज्ञान के अध्ययन में शक्ति एक सर्वाधिक मौलिक धारणा है। एच० जे० मार्गेन्थाउ ने शक्ति के अन्तर्गत उस प्रत्येक शक्ति को शामिल किया है जिसके द्वारा प्रत्येक मानव के ऊपर नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है। शक्ति के विभिन्न रूप, उसकी प्रकृति और प्रयोग तथा शक्ति और प्रभाव का भी अध्ययन किया जाता है।

2. राजनीतिक क्रियाकलाप का अध्ययन — आधुनिक राजनीतिक विज्ञान में विभिन्न राजनीतिक क्रियाकलापों का भी अध्ययन किया जाता है। आज विभिन्न संस्थाओं के ऐतिहासिक अध्ययन के साथ-साथ राज्य, कानून, संप्रभुता, अधिकार, न्याय इत्यादि अवधारणा और सरकार के कार्यों और व्यवहारों की भी विवेचना की जा रही है। यद्यपि यह विवेचना सुकरात के दिनों से ही राजनीतिशास्त्र में पाई जाती है तथापि उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम भाग में राजनीतिक विज्ञान के विद्वानों ने विभिन्न राजनीतिक संगठनों और प्रक्रियाओं के क्रियात्मक पहलू का अध्ययन प्रारंभ कर दिया था।

3. सामाजिक मूल्यों का अध्ययन - आधुनिक राजनीतिक विज्ञान सामाजिक मूल्यों को भी अपने क्षेत्रांतर्गत शामिल करता है। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ही आधुनिक राजनीतिक विद्वानों ने एक अन्य उपागम आदर्शात्मक-निर्देशात्मक को अपनाकर विभिन्न राजनीक संस्थाओं और सरकार के विभिन्न रूपों के गुण-दोषों तथा लाभ-हानि का तुलनात्मक अध्ययन प्रारंभ कर दिया है। प्लेटो, कांट, हीगेल आदि विद्वानों ने आधुनिक राजनीतिक विज्ञान के क्षेत्रांतर्गत सामाजिक मूल्यों की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया है। इस अध्ययन में मानव जीवन और सामाजिक लक्ष्यों की ओर अधिक ध्यान दिया गया है। उत्तर-व्यवहारवादियों ने भी मूल्यों की सत्यता को स्वीकार किया है और मूल्यों को अपने शोध में उचित स्थान देकर राज्य विज्ञान को संगत तथा

उपयोगी बनाने का प्रयास किया है

4. समस्याओं एवं संघर्षों का अध्ययन – आधुनिक ~~आधुनिक~~ राजनीतिक विज्ञान के अन्तर्गत विभिन्न समस्याओं और संघर्षों का भी अध्ययन किया जाता है। चूंकि, इसका आधार अनुभवात्मक (empirical) हो गया है, इसलिए इसका संबंध वास्तविकता अर्थात 'क्या है' से हो गया है। यह उन समस्त समस्याओं एवं संघर्षों का अध्ययन करता है जिनके कारण राजनीतिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़नेवाला है। आधुनिक राजनीतिक विज्ञान इन समस्याओं एवं संघर्षों की उत्पत्ति का कारण खोजता है और इसके लिए तथ्यों की खोज करता है। यह देखता है कि विशेष समस्या का जन्म किसी विशेष परिस्थिति में ही क्यों हुआ, और इसके पश्चात किसी निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करता है।

5. सहमति एवं सामान्य अभिमतों का अध्ययन –

आधुनिक राजनीतिक विज्ञान सही निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए साक्षात्कारों के माध्यम से तथ्यों को एकत्र करता है। यह समाज के विभिन्न वर्गों की सहमति और अभिमतों का अध्ययन करता है। चुनाव के दौरान किसी विशेष वर्ग की क्या सहमति है, यह उसे ध्यान में रखना पड़ता है और उसी आधार पर वह किसी ठोस निर्णय पर पहुँचने का प्रयास करता है। इसके अन्तर्गत वह व्यक्ति की मनोवृत्तियों ~~द्वारा आंकड़ों की संग्रह~~ अभिप्रेरणाओं एवं उसके ज्ञान बोध का भी अध्ययन करता है। इसके अलावा विषय-वस्तु का विश्लेषण, सर्वेक्षण-तकनीक, सत्यापन की प्रणाली तथा अभिप्रेरणा मापन को अधिक प्रयोग में लाया जा रहा है।

लाया जा रहा है। इन विभिन्न प्रणालियों को अपनाने से आधुनिक राजनीतिक विज्ञान के क्षेत्र में व्यवहारिक तत्वों की अप्रत्याशित वृद्धि हुई है।

6. राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन —

आधुनिक राजनीतिक विज्ञान के अनुसार, चूंकि, 'राजनीति' की प्रकृति विशिष्ट है और 'राजनीतिक' तथ्यों, घटनाओं, प्रक्रियाओं तथा गतिविधियों का किसी-न-किसी रूप में शांति, शासन या सत्ता से संबंध रहता है, इसलिए नवीन राजनीतिक विज्ञान इन्हीं से संबद्ध व्यवहार का अध्ययन करता है जिसे हम राजनीतिक व्यवहार कहते हैं। नवीन राजनीतिक विज्ञान राजनीतिक व्यवहार के अन्तर्गत राजनीतिक अभिप्रेरणाओं तथा उद्देश्यों के लिए राजनीतिक समुदाय, राज्य तथा अन्य संगठनों में किए जानेवाले मानव व्यवहार और उसके पीछे वर्तमान मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक व्यवहारों और गतिविधियों का भी अध्ययन करता है।

इस प्रकार विषयक्षेत्र के दृष्टिकोण से आधुनिक राजनीतिक विज्ञान परंपरागत राजनीतिशास्त्र से बिलकुल भिन्न है। आधुनिक राजनीतिक विज्ञान अपने अध्ययन क्षेत्र में राज्य के बिना राजनीति का अध्ययन शामिल करता है। अतएव, आधुनिक विचारधारा के अनुसार राजनीतिक विज्ञान का क्षेत्र काफी विस्तृत हो चुका है और इसे वैज्ञानिकता प्रदान करने की दृष्टि से इसकी परिधि से रूढ़िवादी विषयों को अलग कर दिया गया है। आधुनिक राजनीतिक विज्ञान में मूल्यों, राज्य एवं उसकी संस्थाओं के स्थान पर मानव के राजनीतिक व्यवहार तथा राजनीतिक गतिविधियों का अध्ययन किया जाने लगा है।